स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

पी-एच.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत सार संक्षेपित रूपरेखा

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ, नांदेड.

शोध प्रबन्ध विषय

“यशपाल के कहानी साहित्य में मानवजीवन की चिंता और सामाजिक चुनौतियाँ”

शोध छात्र

लांडगे अमोल ज्ञानोबा

एम.ए, एम.फिल, सेट, (हिंन्दी)

शोध निर्देशिका

प्रा.डॉ. राजश्री डी.भामरे

एम.ए.पी-एच.डी.

शोध निर्देशिका एवं विभागाध्यक्षा

महात्मा गांधी महाविद्यालय,अहमदपूर जि.लातूर

मार्च २०१६

भूमिका

साहित्य मानवजीवन की आलोचना है । मानवजीवन को गहराई से समझने की सर्वाधिक क्षमता साहित्य में ही होती है । साहित्य में संसार के समस्त क्रिया – कलाप और मनुष्य की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और नैतिक समस्याओं का व्यापक एवं सशक्त प्रतिबिम्ब देखने को मिलता है । वास्तविक रूप से मानवजीवन की व्यापकता ही साहित्य की व्यापकता बनती गयी। साहित्यकार कथावस्तू के माध्यम से तत्कालीन समाज की सभी स्थितियों को उजागर करता है। साहित्य की लगभग सभी विधाओं ने पाठकों को सदैव आकर्षित किया है।

शालेय जीवन से ही मेरा गहरा लगाव साहित्य से रहा है । छोटी – छोटी कहानियाँ पढते-पढते मैने माहिवद्यालयीन शिक्षा ग्रहण करते हुए प्रेमचंद, यशपाल, जैनेन्द्र, अज्ञेय, फणीश्वरनाथ रेणु, मन्नू भण्डारी, मोहन राकेश, मृदुला गर्ग आदि कई लेखकों का साहित्य पढना प्रारंभ किया । कई काहनी संग्रह पढने के बाद मुझे उपन्यास पढने में भी गहरा आनंद मिलने लगा । इसीकारण बी.ए.की उपाधि प्राप्त करते समय विशेष रूप से मैने ऐच्छिक हिन्दी विषय का चयन किया । मेरा उद्देश्य हिन्दी साहित्य को अधिक गहराई से जानना - समझना ही था । साहित्य के प्रति गहरा लगाव और साहित्य का अध्ययनकर्ता होने से मै पूरी तरह साहित्य में डूबने लगा । प्रसिध्द साहित्यकारों की सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ पढना मेरा शौक बन गया । प्रेमचंदजी जैसे महान साहित्यकार की कई रचनाएँ पढने के साथ ही मैनेयशपालजी के साहित्य को भी पढना प्रारंभ किया । मैने उनके पिंजरे की उडान, वो दुनिया, तर्क का तूफान, अभिशप्त, फूलों का कुर्ता, उत्तराधिकारी, उत्तमी की माँ आदि कहानी संग्रहों के साथ ही झूठा सच, अमिता, दिव्या, देशद्रोही, दादा कामरेड यह उपन्यास भी पढे । यशपालजी के साहित्य ने मुझे अत्याधिक आकर्षित किया। यशपालजी के विचार, स्वतन्त्रता आन्दोलन में उनका योगदान और सामाजिक जीवन के प्रति उनका झुकाव मुझे उनके साहित्य पर चिंतन करने के लिए प्रेरित करने लगा । यशपालजी के साहित्य पर अधिक सूक्ष्मता और विस्तृत अध्ययन कर उनके साहित्य पर शोधकार्य करने की अभिलाषा मैने मेरी गुरूवर्या डॉ. राजश्री भामरे मॅडम के सामने प्रस्तुत की । मॅडम ने मेरी इच्छा को पहचानकर मुझे तुरंत इस महान साहित्यकार के साहित्य पर शोधकार्य करने के लिए प्रेरित किया । मैने काफी गहराई से सोच- विचार कर अपनी इच्छानुसार ‘यशपाल के कहानी साहित्य में मानवजीवन की चिंता और सामाजिक चुनौतियाँ’ इस विषय को अपने शोधकार्य के लिए चुन लिाया।

मेरी शोध मार्गदर्शिका डॉ. भामरे मॅडम के साथ विचार – विमर्श करने के बाद मैने इस विषय की रूपरेखा तैयार की। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैने अपने विषय को छः अध्यायों में विभाजित किया है । भूमिका के साथ उन अध्यायों का विवरण संलग्न है। उपसंहार एवं निष्कर्ष द्वारा मेरे शोध कार्य का समापन किया है । परिशिष्ठ के रूप में इस सार रूपरेखा के लिए उपयोग किये गये संदर्भ एवं आधार ग्रन्थों की सूची भी दी गई है ।

मेरे यशपालजी के साहित्य के लगाव और गहरे अध्ययन के कारण मुझे पूरा विश्वास है कि, मै अपने शोधविषय को पूरी तरह न्याय दे पऊँगा। मेरी शोध प्रबन्ध मार्गदर्शिका डॉ. राजश्री भामरे मॅडम मेरी महाविद्यालयीन गुरूवर्या रही है, इसलिए मेरे इस विषय को चयन करने के साथ मेरे प्रबन्ध को आगे बढाने में उनका मार्गदर्शन मेरे लिए प्रेरणादायी है । मुझे पुरी आशा है कि, वे मुझे समय- समय पर अपना बहुमुल्य मार्गदर्शन, सहयोग और प्रोत्साहन देकर अपनी शोध निर्देशिका की भूमिका अत्यन्त सफलता से पूरी करेंगी ।

प्राक्कथन :-

भारतीय साहित्य में हिन्दी साहित्य की परंपरा काफी पुरानी है । आदिकाल, मध्यकाल और आधुनिककाल का साहित्य पाठकों को प्रभावित करता रहा है । आधुनिककाल के शुरूवाती दौर में ही प्रेमचन्द के साहित्यिक आगमन से साहित्य में जैसे क्रान्ति सी आ गई । प्रेमचन्दजी ने अधिकांशतः अपने सम्पूर्ण साहित्य में सामाजिकता पर जोर दिया । प्रेमचन्दजी के समान ही यशपालजी ने भी अपने साहित्य लेखन प्रतिभा द्वारा समाज की अनेकों समस्याओं को उद्घाटित किया । उनके सम्पूर्ण साहित्य में मानव जीवन के सामाजिक पक्ष को अधिक उभारा गया है । इसलिए अधिकांश आलोचकों ने उन्हें सामाजिक कलाकार कहरक भी आधुनिक परिवेश में मनुष्य की घुटन, मोहभंग की स्थिती, बदलते रक्त सम्बन्ध, दाम्पत्य सम्बन्धों का तथा अनेकों विषयों में मानव अपनी समस्त दुर्बलताओं और सबलताओं के साथ उपस्थित हुआ है । उन्होने जिस समस्या को अपने साहित्य में उठाया उसके प्रति उनका दृष्टिकोण उदार ही रहा, व्यापक सहानुभूति से ही उन्होने उसका अंकन किया है।

शोधकार्य की भूमिका :-

मानव विवेकशील प्राणी है। मानव के हृदय में संचित ज्ञान वह अभिव्यक्त करना चाहता है। इसी अभिव्यक्ति की जिज्ञासा के कारण मनुष्य ने काव्य, महाकाव्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध, कविता आदि की रचना की।

शोधकार्य के विषयानुसार साहित्य का समाज और मानव जीवन पर गहरा प्रभाव रहता है। साहित्य के माध्यम से मनुष्य ने जीवन की वास्तविक स्थितियों को प्रदर्शित किया। अपने साहित्य द्वारा साहित्यकार अपने मन की बात पाठकों के मन के निकट पहुँचाता है। उसी प्रकार यशपालजी ने भी अपने साहित्य के माध्यम से अनेकों सामाजिक गतिविधियों को समाज के सामने रखा। मैने यशपालजी के अधिकांश साहित्य का अध्ययन किया और अपने शोधकार्य के लिए उनके साहित्य के अनछूए पहलू "यशपाल के कहानी साहित्य में मानवजीवन की चिंता और सामाजिक चुनौतियाँ " इस शीर्षक का चयन किया । इसी शीर्षक के अंतर्गत मै अपना शोधकार्य पूरी आस्था से पूर्ण करूंगा।

शोधकार्य का उद्देश्य :-

साहित्य का मानवजीवन, मानव मन तथा समाज जीवन पर गहरा प्रभाव होने के कारण साहित्य और समाज का धनिष्ठ सम्बन्ध दृष्टिगोचर होता है । साहित्य में आरंभिक काल से सामाजिक विषयों की अभिव्यक्ति होती रही है। साहित्य के शुरूवाती दौर से सामाजिक कहानियाँ और सामाजिक विषयों का बोलबाला रहा । सभी साहित्यकार अपने साहित्य में तत्कालीन अनेकों समाजिक समस्याओं को उद्‌घाटित करते रहे। यशपालजी ने भी अपने साहित्य में अनेकानेक सामाजिक समस्याओं को प्रमुख्यता दी । उनकी रचनाओं के अनेकों पात्र सामाजिक चुनौतियों के शिकार है । अनेकों चुनौतियों को स्विकारते हुए अपने जीवन को सहज - समृद्ध बनाने का प्रयास उनके कई पात्र करते नजर आते है। उनके चरित्रों की यह विशेषता मुझे निरंतर प्रभावित करती रही। इसीलिए यशपालजी के कहानी साहित्य में अभिव्यक्त मानवजीवन की चिंता और उनके सामने खडी अनेकों सामाजिक चुनौतियों का सूक्ष्म, विस्तृत और गहन अध्ययन करना यही मेरा उद्देश्य है । मै अपने शोधकार्य के इस उद्देश्य को निम्नप्रकार से वर्गीकृत करने का सफल प्रयास करूंगा –

१) सामाजिक - राजनीतिक व्यवस्था का शिकार- मानव

२) बेरोजगारों की समस्या

३) महँगाई से परेशान आम - आदमी

४) समाज में व्याप्त शोषकों के षडयंत्र का शिकार - मानव

५) महानगरीय जीवन की त्रासदी

६) मध्यवर्गीय जीवन की कुण्ठा

७) रक्त - सम्बन्धों में घटती आत्मीयता

८) समाज में नारी की दयनिय स्थिति

९) आधुनिक युग में दाम्पत्य - सम्बन्धो में बिखराव

उपरोक्त सामाजिक - समस्याओं और चुनौतियों की अध्ययन सुविधा के अनुरूप मैने शोध प्रबन्ध का विभाजन निम्न अध्यायों के अंतर्गत रखा है ।

“यशपाल के कहानी साहित्य में मानवजीवन की चिंता और सामाजिक चुनौतियाँ ”

१. प्रथम अध्याय :-

यशपाल : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

व्यक्तित्व :-

१.१ जन्म

१.२ पारिवारिक विवरण

१.३ शिक्षा

१.४ कार्यक्षेत्र

१.५ स्वभाव एवं विचारधाराएँ

१.६ मृत्यु

१.७ यशपाल पाठकों की दृष्टि में

कृतित्व :-

१.८ आत्मकथा

१.९ कहानी संग्रह

१.१० उपन्यास

१.११ निबन्ध

१.१२ संस्मरण

१.१३ नाटक

१.१४ पत्र - साहित्य

१.१५ अनुवादित साहित्य

२. द्वितीय अध्याय :-

यशपाल की रचनाओं में समसामायिक विषयों की अभिव्यक्ति

२.१ विषयों की प्रासंगिकता

२.२ विषयों की वास्तविकता

२.३ विषयों की विविधता

२.४ जीवन की सहज स्वीकृती

२.५ वर्तमान समस्याओं का दर्शन

२.६ सामाजिक परिवर्तन और प्रगतिशील दृष्टिकोण

३. तृतीय अध्याय :-

यशपाल के कहानी साहित्य में संघर्षशील मानव तथा सामाजिक चुनौतियाँ

३.१ संघर्ष शब्द का अर्थ, परिभाषा और स्वरूप

३.२ पारिवारिक संघर्ष करते चरित्र

३.३ आर्थिक संघर्ष करते चरित्र

३.४ शिक्षित बेरोजगार युवाओं की सामाजिक चुनौतियाँ

३.५ राजनीतिक चुनौतियों के शिकार पात्रों का संघर्ष

३.६ प्रशासकिय चुनौतियों के विरूध्द संघर्षशील मानव

४. चतुर्थ अध्याय :-

यशपाल के कहानी साहित्य में सामान्य मनुष्य के अस्तित्व की तलाश

४.१ अस्तित्व से तात्पर्य

४.२ अस्तित्व को तलाशता सरल - मानव

४.३ आर्थिक विपण्णताग्रस्त मानव के अस्तित्व की छटपटाहट

४.४ शहरीकरण के कारण कुष्ठाग्रस्त मानव का अस्तित्व

४.५ द्वन्द्वात्मक स्थिति से गुजरते मनोवैज्ञानिक पात्र

४.६ अस्तित्व को संजोते बर्हिमुखी चरित्र

५. पंचम अध्याय :-

यशपाल के कहानी साहित्य पर मार्क्सवाद का प्रभाव

५.१ पूंजीवाद और गांधीवाद का विरोध

५.२ जमींदारों की शोषनवृत्ति के विरूद्ध विद्रोह

५.३ भ्रष्ट राजनीति के प्रति आक्रोश

५.४ सामाजिक अत्याचार, विषमताओं एवं संकुचित विचारों का विरोध

५.५ ईश्वर तथा अंधविश्वासों का विरोध

५.६ साम्प्रदायिक और अलगाववादी प्रवृत्तियों पर प्रहार

६. षष्टम अध्याय :-

समकालीन साहित्यकारों में यशपाल का स्थान

६.१ यशपाल के समकालीन साहित्यकार

६.२ यशपाल की समाजपरकता

६.३ आलोच्य साहित्यकार एवं यशपाल के साहित्य में प्राप्त शिल्पविधान

- कथानक
- चरित्र – चित्रण
- कथोपकथन
- देशकाल का वातावरण
- शैली
- उद्देश्य

७. सप्तम अध्याय :-

उपसंहार एवं निष्कर्ष

७.१ यशपाल के साहित्य की विशेषता

७.२ यशपाल के साहित्य में जीवनमूल्य

परिशिष्ट – १

संदर्भ ग्रन्थ सूची

१) पिंजरे की उड़ान - यशपाल - लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

२) वो दुनियाँ - यशपाल - लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

३) तर्क का तूफान - यशपाल - लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

४) ज्ञानदान - यशपाल - लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

५) अभिशप्त - यशपाल - लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

६) भस्मावृत्त चिन्गारी - यशपाल - लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

७) फूलों का कुर्ता - यशपाल - लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

८) धर्मयुध्द - यशपाल - लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

९) उत्तराधिकारी - यशपाल - लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

१०) यशपाल कि कहानीयाँ कथ्थ और शिल्प – चंद्रभानु सोनवणे – पंचशील प्रकाशन,जयपूर

१२) यशपाल कि कहानी कला – कु.अनु विग – नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली

१३) अधुनिक हिंदी कहानी में वर्णित सामाजिक – ज्ञानचंद शर्मा - राधाकृष्ण पब्लिकेशन, दिल्ली

१४) अधुनिक हिंदी कहानी में प्रगती चेतना – डॉ.लक्ष्मण दत्त गौतम – कोणार्क प्रकाशन, दिल्ली

परिशिष्ट :- २

सहायक पत्र – पत्रिकाएँ

१) आलोचना

२) मधुमती

३) हंस

४) राष्ट्रभाषा

५) कादाम्बिनी

६) समकालीन हिन्दी साहित्य

- ❖ शोधकार्य पध्दती :-

  प्रस्तुत शोधकार्य के लिए विविध साहित्यिक ग्रन्थों तथा संदर्भिय ग्रन्थों का उपयोग किया जायेगा ।

- ❖ शोधकार्य में समयानुकूल परिवर्तन किया जा सकता है ।
- ❖ शोधकार्य के लिए पर्याप्त सामग्री उपलब्ध होगी या नही यह निश्चित करना संभव नही हो पायेगा ।

शोध – निर्देशिका

प्रा.डॉ.राजश्री डी.भामरे

एम.ए., पी-एच.डी.

शोध निर्देशिका एवं विभागाध्यक्षा

म.गांधी महाविद्यालय,अहमदपूर जि.लातूर

शोध – छात्र

लांडगे अमोल ज्ञानोबा

एम.ए., एम.फिल, सेट (हिन्दी)

“यशपाल के कहानी साहित्य में मानवजीवन की चिंता और सामाजिक चुनौतियाँ ”

विषयानुक्रमणिका

१. प्रथम अध्याय :

यशपाल व्यक्तित्व एवं कृतित्व

२. द्वितीय अध्याय :

यशपाल की रचनाओं में समसामायिक विषयों की अभिव्यक्ति

३. तृतीय अध्याय :-

यशपाल के कहानी साहित्य में संघर्षशील मानव तथा सामाजिक चुनौतियाँ

४. चतुर्थ अध्याय :

यशपाल के कहानी साहित्य में सामान्य मनुष्य के अस्तित्व की तलाश

५. पंचम अध्याय :

यशपाल के कहानी साहित्य पर मार्क्सवाद का प्रभाव

६. षष्टम अध्याय :

समकालीन साहित्यकारों में यशपाल का स्थान

७. सप्तम अध्याय :

उपसंहार एवं निष्कर्ष